© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Education

कविताक संदर्भ में विभिन्न वादक उदय

डॉ० राजेश मिश्र
ग्राम–भट्टपुरा, पोस्ट–सरिसब पाही
दरभंगा

ABSTRACT
कविता काव्यक एक वधा थिक। एकर जन्म वस्तुतः आधुनिक काल में भेल अछि। एहि हेतु एहि पर विचारपूर्ण आधुनिक चिंतन धाराक अनुकूल संभव अछि।
कवि पहिने मनुष्य छथि। मनुष्य विवकेशील ज्ञानी प्राणी अछि आ ओकरा मे अपन विकासक क्षमता निहित रहैत छैक।
विकासक क्षमता रहला सँ मनुष्य अपन जीवनक सभ स्तर पर विकासक क्रिया करैत आयल अछि। विकासक क्रिया कमूल मे ज्ञान छैक। ज्ञान मनुष्यक संगहि चलैत अछि आ इएह कारण अछि जे जन्म सँ लए मृत्यु र्प्यन्त ओ सिखैत चल जायत अछि आओर अनुभव सँ अपन पीढ़ी कँ वितरण करैत भावी पीढ़ी लेल धरोहर रूप मे छोड़ि चल जाइत अछि।

मनुष्य–मनुष्य संग ज्ञानक क्रियाक जे आदान–प्रदान होयत अछि, ताहि सँ जे अनुभव होयत अछि अपन पूर्व ज्ञान मे अर्जित कए नीक अधलाह भाव वा विचार में अपन अस्तित्व जोड़ि भावी पीढ़ी लेल प्रस्तुत कए दैत अछिं। इएह ज्ञानक विचिन्तनधारा एक पीढ़ी सँ दोसर पीढ़ी तक पहुँचि जायत अछि। तँहम कहैत छी ज्ञानक चिंतन धारा मनुष्य कँ अविच्छिन्न रूप में प्राप्त भेलैक अछि।[1] एहि चिंतन धाराक ज्ञान विकास हम अपन जीवन मे जतेक जोड़ैत छी ततेक विकसित होयत छी।
कविक कवित्वक विकासो अहिना भेल अछि। वाड्मय ज्ञान हुनका पूर्ण प्रतिभावान बनौलक अछि आ युग–युग तक विशेष स्थान दियौलक अछि।
मनुष्य–मनुष्य संग निरंतर संबंध व्यापक होयत आयल अछि। जँ–जँ मनुष्य मनुष्य सँ परिचय प्राप्त होयत अछि तँ तँ ओकर स्वभाव–रूचि–व्यवहार संस्कृति ओ सभ्यताक आदान प्रदान होमय लगैत छैक जकर सुखद परिणाम होयत अछि जे एक–दोसरा मे प्रगाढ़ संबंध स्थापित भए जायत अछि।
एहि युग में आबि मनुष्य बहुत किछु सिख लेलक आछि। एकर कारण अछि दूर–दूर क मनुष्य एतेक लग भए गेल अछि, जे बुझना जाय लागल अछि जेना ओ एकहि परिवारक लोक होअय। एकर कारण छैक सम्पर्क सूत्र जे हमरा वैज्ञानिक यंत्र सँ प्राप्त भेल अछि।
हम अपन संचित ज्ञान कँ दू भाग में विभाजित करैत छी। 1. जे हमरा पूर्वज सँ प्राप्त भेल अछि जकरा प्राचीन ज्ञान कहैत छी 2. सम्पर्क सँ जे प्राप्त भेल अछि ओकरा पाश्चात्य ज्ञान कहैत छी।

प्राचीन ज्ञान जे काव्य संबंधी प्राप्त अछि प्राचीन काव्य चिंतन धारा थिक, पाश्चात्य ज्ञान काव्य संबंधी प्राप्त अछि पाश्चात्य काव्य चिंतन धारा थिक। प्राचीन काव्य हो वा पाश्चात्य काव्य, चिंतकक मत मे जे भिन्नता पबैत छी तकरे हम वाद कहैत छी।

कविता आधुनिक युगक कविक निर्माण काव्यक एक विधा थिक। किंतु, एकर रूचि संस्कार स्वभाव प्रवृति भाव ओ भाषा पर दुनू चिंतन धाराक प्रभाव पड़ल अछि।

कविता आधुनिक युगक देन अछि। एहि युग में जीवन क्रियाक जे स्वरूप बदलल तकरे आवश्यकताक पूर्ति लेल कविताक जन्म भेल।

जीवनक क्रिया जन्म सँ लए मृत्यु पर्यन्त चलैत अछि आ ओकर प्रतिबिम्ब कविता मे होयत रहैत अछि तँ हम कहैत छी कवि वूर्ण जीवनक अभिव्यक्ति अपन कविताक माध्यम सँ करैत छथि।

कविता जखन कविक इच्छा आकांक्षा ओ निजी व्यक्तिवक मधुरतम अभिव्यक्ति थिक तँ ओ नव प्रयोग करबे करताह जाहि सँ सामाजिक आनन्द में नव स्वादक अनुभूति होनि। कविक ई सूक्ष्म भाव विचार कविता मे एहि रूपँ अन्तर्निहित रहैत अछि जे सहृदयी कँ बोधे नहि होयत छनि जे कविक संदेश की छनि? मात्र सुनि ''वाह–वाह'' करताह।

कविक कविता मे जे तत्व बोध होइत अछि ओ मात्र कवि रचनाक पारखी कँ हायेत जे काव्य अनुशीलन मे लागल रहैत छथि। एहि हेतु कहल गेल छैक ''ई प्रतीयमनार्थ शब्द शास्त्र (व्याकरण) एवं अर्थ शास्त्र (कोशादि) क ज्ञान मात्र सँ प्रतीत नहि होयत अछि। ई तँ मात्र काव्य मर्मज्ञ लोकनि कँ ज्ञात भए सकैत छनि।[2]

कवि काव्यक स्रष्टा छथि आ काव्य रसक आस्वादन पंडित लोकनि करैत छथि

''कविः करोति काव्यानि
स्वादं जानन्ति पंडिताः
छुहितायं रूप लावणस्यः
पतिजानाति नो पिता।।

अस्तु, कविताक सम्पूर्ण विषय–वस्तु संग ओकर उपस्थापना कोन रूपक आछि? केहन होयवाक चाही? एहि मे की विलक्षणता अछि? समय सापेक्ष अछि वा नहि? कविक कल्पना कतेक यथार्थ अछि वा संगति सँ भेल छैक वा नहि? संवेदनात्मक अछि वा नहि? मानवीय कल्याणक अवहेलना नहि तँ भए रहल अछि? कविक संदेश नूतन प्रयोग संग कतेक उचित अछि? एहि पर विचार समालोचक करैत छथि। एक दिस समालोचक सूक्ष्म सँ सूक्ष्म कविता रचनाक विषय–वस्तु पर विचार करैत गुण–दोषक आधार पर कवि पर निंत्रण स्थापित करत छथि तँ दोसर दिस सामाजिक कँ काव्यानन्दक पूर्ण लाभ पहुँचा, हानि नहि हो सेहो सचेत करैत छथि।3

हमर ज्ञान अविच्छिन्न रूप मे विस्तार होयत अछि आ तद्युगीन जीवन ओहि मे प्रतिबिम्बित होयत अछि तँ हम ओहि सँकटि कोना किछु विचार कए सकैत छी? हँ एहि आधार पर हम अपन दृष्टि कँ धार दार बना मौलिक चेतना कँ आत्म सात कए किछु नूतन प्रयोग करैत छी से हमर व्यक्तित्वक परिणाम होयत।

कविता मे विभिन्न वादक उदय जे भेल अछि तकर रूप–रेखा हम प्रस्तुत कए रहल छी।

प्राचीन चिन्तनधाराः–

प्राचीन चिन्तक धाराक प्रभाव हमर कविता पर पूर्ण रूप सँ पड़ल अछि तकरा निम्नलिखित वादक अंतर्गत राखि सकैत छी

अलंकार वाद – अलंकार वादी आचार्य काव्य में सभ किछु अलंकारे कँ मानैत छथि। रसहु एहि अंतर्गत अछि। एहि सँ काव्य मे चमत्कार अबैत छैक। मैथिली कविता मे सेहो अंलकार क महत्व देल गेल।

अलंकार सँ कविताक सौन्दर्य बढ़ि जायत अछि। कोनो कविता मे जाखन अलंकारक झंकार होयत अछि तँ स्वतः पाठक ओहि दिस आकृष्ट भए जायत छथि। केसव दासक कहब छनि यदपि सुजात सुलक्षणी सुबरण, सरस, सुवृत भूषण बिनुन विराजई, कविता, वनिता मित्त।

प्राचीन काव्यक आधार पर गढ़ल गीति काव्य जखन अलंकारक भार सँ ऐंचि रहल छल तखन आधुनिक कालक कवि लोकनि एहि प्रति विरोध प्रदर्शन कयल आ कविताक हेतु एकर कोनो प्रयोजन नहि मानल। मम्मटाचार्य सेहो एकर आग्रही नहि छथि आ भुवन जी एकरा भार स्वरूप मानल।[4]

हमर धारणा रहल अछि अलंकार कविता में स्वाभाविक रूपँ रहत तँ अवश्य एकर सुषमा बढ़ि जायत।

अलंकार अनेक प्रकारक होयत अछि आ एकर प्रयोग सेहो हमर मैथिली कविता मे पूर्ण रूप सँ भेल अछि। प्रगीतिवाद–प्रगतिवाद–प्रयोगवाद मे जे अलंकारक प्रयोग भेल अछि तकर उदाहरण क्रामिक रूप मे दैत छी–

1. ''बहए मलया निल निरंतर
   रहए सजला मेघ माला
   पड़ए पाला नहि विनाशक
   जड़ंए दुखद निदाघ ज्वाला।।[5]''
2. मया मोह पानि मटकुड़ी
   मृत्यु सूत अछि काटक डोरी
   प्रण्यक रौदें निस्पन तनघट विपदक आबा दुख चिनगोरी आबा पाकल लाल देह ई पूर्ण भेल अछि काजक जलकण[6]
3. हे उर्त्वशी!
   वे देखत आब आदि–मुद्राक चकित मुदित अलस नाच
   अभाव चूल्ही जरइए, लोक लगबइए प्राण जारनि आँच
   सम्राट विक्रम पुरूरवादि भए गेलाह दरिद्र
   सामान्ती–जीवन केशरी मे भेल अछि लक्षलक्ष छिद्र
   आ, हम सम अर्जुन, महाभारत जितबा मे लागल छी
   मरल नइँ सूतन नइँ, जागल छी।''[7]

   एहि तरहे कहि सकैत छी कोनो तथ्य, अनुभूति, घटना वा चरित्रक प्रभाव पूर्ण अभिव्यक्तिक लेल अलंकारक प्रयोग आवश्यक अछि।

   रीतिवादः–

   रीतिवादीक प्रथम आचार्य वामन छथि। वामन ''विशिष्ठ पद' रचना कँ रीति मानल अछि जे 'विशेष गुण' पर आधारित अछि।

रीति अर्थ कोषागत अछि– 'गमण प्रणाली', अर्थात् जाहि सँ गतिशील होय। हमर भाव वा विचार एही सँ गतिशील भए अभिव्यक्ति होयत अछि। मार्ग, पन्थ, पद्धति, प्रणाली, शैली एकर पर्यायवाची शब्द थिक।

रीति आइ शैलीक रूप में व्यवहृत अछि। विना शैलीक भाव वा विचारक अभिव्यक्ति नहि भए सकैत अछि।

कविताक अभिव्यक्तिक स्वरूप स्वभाविक रूप सँ परिवर्तन होयत अछि। प्रगीति कविता प्रगतिवादी कविता प्रयोगवादी कविताक रचना शैली मे पूर्ण भिन्नता अछि।

ध्वनिवाद–

काव्य में ध्वनिक प्रधानता सर्व प्रथम आनन्दवर्द्धन देलनि। ध्वनि सँ काव्यक दुनू पक्ष पर पूर्ण प्रभाव पड़ैत अछि तँ एकर सत्ता सभ ठाम देखल जाय सकैत अछि। ध्वनि शब्द ओ अर्थ दुनू मे रहैत अछि। ध्वनि अक्षर–अक्षर के मेल ओ अर्थ युक्त भेला पर काव्य कारक शिल्प विधान सँ अत्यंत चमत्कृत भए रसानुभूतिक योग्य बनैत अछि। एकर सत्ता मम्मट पूर्ण रूप सँ स्वीकार कएने छथि।

शब्दक तीन अर्थ अछि 1. अभिधा जे साधारण अर्थक बोध करबैत अछि। 2. लक्षणा जे लाक्षणिक अर्थक आभास करबैत आछि। 3. व्यंजना जे विलक्षण अर्थक बोध करबैत अछि। अमिधा मूलक कविता अधम कोटिक होयत, लक्षणा मूलक कविता मध्यम कोटिक होयत, व्यंजना मूलक कविता उत्तम कोटिक होयत।

क्विता मे ध्वनिक सत्ता यथार्थ वादी प्रणालीक अंतर अवश्य स्वीकार भेल अछि। एकर चारूता व्यंग्यार्थ मे निहित छैक जकर स्पष्ट चित्र हमरा यात्री जीक कविता 'कवि स्पप्न' मे भेटैत अछिः–

''तोहर मन दौड़ैत छह कोठा दिशा पैघ–पैध धनीक दिश दरवार दिशा गरीबक दिश ककर जाइत छइ नजरि के तकइ अछि हमर नोरक धार दिश।

कोठा दिस स्वार्थी समाजक आकर्षण ओ गरीब नोरक उपेक्षा मे उपहासक ध्वनि सहज संवेदनशील व्यंग्यार्थक बोध अर्थक चारूता काव्यक सौन्दर्य मे घनीभूत भए जायत अछि।

भाव वादीक जीवन पीड़ा एहि मे अछि–

छीप जरैत रहल
वेदना मोम सन घमैत रहल
टघरैत नोर मे
कागतक नाओ जकाँ
भावना बहैत रहल।

एक नारीक मनोव्यथाक ध्वनि कविताक माध्यम सँ अन्तर्मनक रहस्य सहज संवेद्य अछिः–

''सून अछि आँगन
सून नयन कोर
रूच्छ भेल साओन
टूटल आसक डोर
राति अछि भयाओन
दिन शमसान

जरि रहल भादो आसिन
छुच्छ खरिहान

पेट आगि पजरय
आँखि नोर झहरय
बाध बोन जरि रहल
मेध आगि बरिसय
पिया भेल विदेशिया
नेना नेने दुखिया
अछि बाट जोहि रहल
बस ओतबे असिया।

एहि तरहें कहि सकैत छी हमर कविताक पूर्ण विकास जाहि प्रक्रिया सँ आगू बढ़ल अछि से निश्चित रूप में विभिन्न वादक उदय ओ ओकर श्रृंखलाबद्ध चेतनाक संघर्षक परिणाम थिक।

संदर्भ सूची :–

1. भाषा की विशेषताएँ और प्रवृतियाँ, भाषा विज्ञान की भूमिका, पृ० 48, डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. शब्दार्थ शासन ज्ञान मात्रेवन वेद्यते।
3. वैद्यते स तु काव्यार्थ तत्वज्ञैरेवकेपलम्।।– ध्वन्यालोक, 117
4. मैथिलीक आलोचना साहित्यः अनुसंधान एवं आलोचना, डॉ० दिनेश कुमार झा, पृ० 112
5. आषाढ़क भूमिका, भुवनजी, भुवन भारती।
6. मंगलगान, भुवन जी, भुवन भारतीः श्रीश, 1
7. कुम्हारक चाक, माथुर नवीन गीत, सं० रमानाथ झा, पृ० 177।
8. श्यनकक्षक नारी सँ, स्वरगंधा, राजकमल।

♦♦♦♦♦